टिप्पणी

301hi01

1
कविता कैसे पढ़ें

बचपन में आपने बहुत सी कविताएँ याद की होंगी। कई कविताएँ पढ़ी भी होंगी। अब तक आप तरह-तरह की कविताओं से परिचित हो चुके हैं। इन कविताओं को पढ़ते हुए शायद आपके मन में एक प्रश्न बार-बार उठा होगा कि कविता है क्या? वे तत्त्व क्या हैं जो कविता को गद्‌य से अलग करते हैं? इस प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ते समय आपने महसूस किया होगा कि कविता में मुख्य रूप से भावों और गद्‌य में प्रायः विचारों की प्रधानता होती है।

मनुष्य अपने हर अनुभव को किसी-न-किसी प्रकार से अभिव्यक्त करने का प्रयास करता है। कई बार आदमी अपने जिस अनुभव को कहकर अथवा बोलकर अभिव्यक्त नहीं कर पाता उसे गुनगुनाकर या रंगों के माध्यम से, इशारे से अथवा अभिनय के द्वारा आसानी से प्रकट कर देता है। कविता भाषा का एक ऐसा ही माध्यम है, जिसके द्वारा भावनाएँ व्यक्त की जाती हैं। कविता में सौंदर्य तथा भावना की सहज अभिव्यक्ति होती है, जो पाठक के मन को आसानी से छू जाती है।

प्रस्तुत पाठ में हम कविता क्या है, इसे क्यों और कैसे पढ़ा जाना चाहिए आदि प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने का प्रयास करेंगे।

उद्‌देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- कविता का स्वरूप स्पष्ट कर सकेंगे;
- कविता के महत्त्व का उल्लेख कर सकेंगे;
- कविता के अवयवों का सूचीकरण कर सकेंगे;
- कविता क्यों तथा कैसे पढ़ी जाए, बता सकेंगे;
- कविता के भावपक्ष तथा शिल्प सौंदर्य की व्याख्या कर सकेंगे।

टिप्पणी

क्रियाकलाप

अपनी पसंद की किसी भी कविता की चार पंक्तियाँ यहाँ लिखकर उसमें निहित मूलभाव को स्पष्ट कीजिए

कविता

____

____

____

____

____

मूलभाव

____

____

____

____

____

1.1 आइए समझें

कविता का स्वरूप

आप जानते हैं कि कविता साहित्य की सबसे प्राचीन विधा है। अधिकांश प्राचीन भारतीय ग्रंथों की रचना कविता में ही हुई है। कविता को पारिभाषित करने तथा इसके स्वरूप को पहचानने का प्रयास प्राचीन काल से ही होता रहा है। प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में कहा गया है कि 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्' अर्थात् शब्द और अर्थ के सुंदर सामंजस्य को ही काव्य कहा जाता है। इसी परिभाषा को आधार मानकर प्राचीन काव्य शास्त्रियों ने काव्य की आत्मा को ढूँढ़ने का प्रयास किया था। किसी ने रस को कविता की आत्मा माना तो किसी ने ध्वनि को, किसी ने रीति को माना, तो किसी ने वक्रोक्ति को और किसी ने अलंकार को। किंतु बाद में हिंदी साहित्य में कविता की परिभाषा दूसरे ढंग से की जाने लगी।

प्राचीन काल में अलंकारों का बहुत महत्त्व था, परंतु आधुनिक काल में अलंकारहीन कविता की परंपरा चल पड़ी। छंद के भी बंधन नहीं रह गए। छंदहीन कविताओं की झड़ी-सी लग गई। कविता शब्द के गूढ़ अर्थ से अलग होकर सामान्य शब्दों के प्रयोग

द्वारा व्यंग्य और विरोध को उजागर करने लगी। उदाहरण के लिए निम्नलिखित काव्य पंक्तियाँ देखिए–

कुछ लोग मूर्तियाँ बनाकर
फिर
बेचेंगे क्रांति की (अथवा)
(षड्यंत्र की)
कुछ और लोग
सारा समय
कसमें खाएँगे
लोकतंत्र की।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कविता की परिभाषा तथा स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए कहा है, *''हृदय की मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं।''* कविता से मानव भाव की रक्षा होती है। मानो वे पदार्थ या व्यापार विशेष नेत्रों के सामने नाचने लगते हैं। वे मूर्तिमान होते दिखाई देने लगते हैं। उसकी उत्तमता या अनुत्तमता का विवेचन करने में बुद्धि से काम लेने की ज़रूरत नहीं पड़ती। कविता की प्रेरणा से मनोवेगों काऽप्रवाह फूट पड़ता है। तात्पर्य यह है कि कविता मनोवेगों को जाग्रत करने का उत्तम साधन है।

कुछ इसी तरह की परिभाषा आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने भी दी है, *''कविता का लोक प्रचलित अर्थ वह वाक्य है, जिसमें भावावेश हो, कल्पना हो, पदलालित्य हो तथा प्रयोजन की सीमा समाप्त हो चुकी हो।''*

भावतत्त्व

व्यक्ति के भीतर उठने वाली भावनाएँ, कल्पनाएँ और अनुभव।

इस प्रकार कविता का स्वरूप उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कुछ इस तरह निर्धारित किया जा सकता है।

- कविता में भाव तत्त्व की प्रधानता होती है।
- कल्पना के मिश्रण से सौंदर्य चित्रण को कविता में सहज और ग्राह्य बनाया जाता है।
- कविता में चिंतन अथवा विचारों की जटिलता नहीं होती।
- कविता की शब्दावली गद्य से विशिष्ट होती है। इसमें लयात्मकता अनिवार्य रूप से मौजूद होती है तथा शब्दों का संयोजन पाठक के हृदय को सहज ही छू जाता है। कम-से-कम शब्दों में बड़ी-से-बड़ी बात अथवा समस्या को बहुत ही सुंदर ढंग से चित्रित किया जाता है।
- कविता में केवल अर्थ ग्रहण कराकर बात को स्पष्ट करने की क्षमता नहीं होती, बल्कि इसके द्वारा बिंब-विधान भी किया जाता है। कविता का बिंब-विधान ही पाठक के मन में कविता के प्रभाव को स्थायित्व प्रदान करता है। बिंब एक प्रकार का शब्द चित्र होता है, जो कविता में ही उपस्थित होता है। इसी कारण

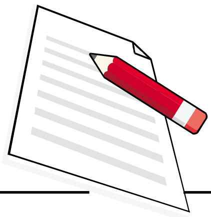

कविता का अर्थ अभिधा की अपेक्षा लक्षणा अर्थात् स्थिति की लाक्षणिकता के आधार पर ग्रहण किया जाता है।

साथ में दिए चित्र को ध्यानपूर्वक देखिए...। आपको कैसा लग रहा है या आप क्या देख रहे हैं? आप देख रहे हैं– एक स्त्री, इसके अलावा एक और चेहरा आपको नज़र आ रहा होगा। यह नारी भी हो सकती या कोई नर... वह क्या सोच रहा है? दिए गए दो गोले किसके प्रतीक हैं... चाँद का या सूरज का... रात का चित्र है या दिन का...? इसके अतिरिक्त भी आप बहुत कुछ सोच रहे हैं... सोच सकते हैं... बिल्कुल समान स्थिति कविता के साथ भी होती है। किसी एक कविता को पढ़ने के बाद अलग-अलग व्यक्ति अलग-अलग तरीके से कविता का भाव ग्रहण करता है।

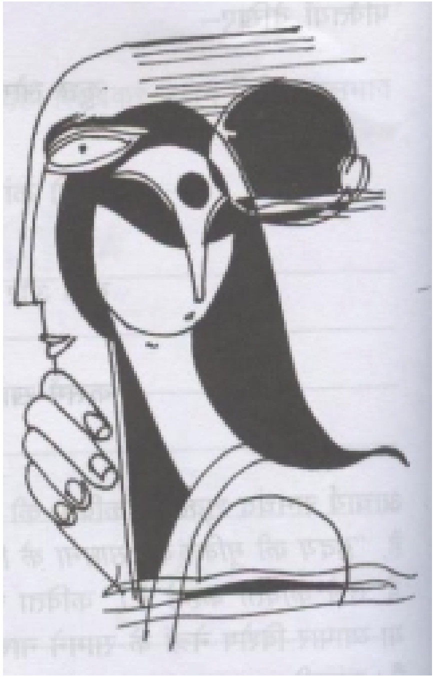

पाठगत प्रश्न 1.1

सही विकल्प का चयन कर निम्नलिखित वाक्यों को पूरा कीजिए:

1. कविता में ....तत्त्व की प्रधानता होती है।

   (क) भाव, (ख) विचार, (ग) कल्पना, (घ) एक

2. आधुनिक कविता में ....कविता की परंपरा चल पड़ी।

   (क) अलंकृत, (ख) अलंकारहीन, (ग) छंदबद्ध, (घ) वक्रोक्तिमूलक

3. किसने कहा है कि 'कविता हृदय की मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य द्वारा रचित वाणी विधान है।'

   (क) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, (ख) बाबू गुलाब राय, (ग) आचार्य रामचंद्र शुक्ल (घ) दंडी

4. कविता में अनिवार्य रूप से मौजूद होती है।

   (क) उत्तमता, (ख) लयात्मकता, (ग) क्षमता, (घ) चित्रात्मकता

1.2 कविता का महत्त्व

आपने अनुभव किया होगा कि यदि कभी आप अपनी बात को ठीक से अभिव्यक्त नहीं कर पाते या अधिक प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करना चाहते हैं और नहीं कर पाते, तब कविता की एक या दो पंक्तियाँ ही आपकी समस्या को आसान बना देती हैं। तुलसीदास की एक चौपाई अथवा बिहारी के एक दोहे का जितना असर सुनने वाले पर होगा, शायद उतना असर एक कहानी सुनाने से न हो। कवि बिहारी द्वारा राजा जयसिंह को भेजे गए एक दोहे का असर यह हुआ था कि वे अपनी नवविवाहिता पत्नी के मोह से मुक्त

होकर राज्य की रक्षा के लिए निकल पड़े थे। कविता के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भी कहा है कि कविता की प्रेरणा से कार्य में प्रव त्ति बढ़ जाती है।

प्राचीन काल में कविता को मनोरंजन का साधन भी समझा जाता था। दरबारों में कवि कविताएँ सुनाकर राजाओं का मनोरंजन किया करते थे। तब कविता पाठ्यक्रम में पढ़ाई जाने वाली कोई चीज़ नहीं थी। आप कभी-कभी सोचते होंगे कि कविता भी भला कोई पढ़ने की चीज है? यह मनोरंजन की चीज़ कैसे हो सकती है? इसके न तो शब्द समझ में आते हैं, न इसमें कही गई बात। इससे तो कहानी-उपन्यास अच्छे हैं, जिनमें कही गई बात आसानी से समझ में आ जाती है। उसके लिए कविता की तरह किसी व्याख्या की ज़रूरत नहीं होती।

लेकिन इस तरह आपका सोचना ठीक नहीं होगा, क्योंकि कविता सिर्फ़ मनोरंजन की वस्तु नहीं है। चूँकि कविता कम-से-कम शब्दों और अपनी विशिष्ट भाषा तथा शिल्प-सौंदर्य से बातों को स्पष्ट करते हुए चलती है और बहुत-सी बातें उसमें छिपी रहती हैं जिन्हें समझने के लिए उन्हें खोलते रहना आवश्यक होता है। अतः यह गद्य की अपेक्षा कठिन लगती है। लेकिन यह भी तो देखिए कि कविता ही है, जो अधिक देर तक आपको याद रह जाती है। उदाहरण के लिए आप उपयुक्त समय और स्थान पर आसानी से इसका उपयोग कर सकते हैं। अब आप बताइए कि कविता कैसे मनोरंजन की वस्तु हुई? इस संबंध में रामचन्द्र शुक्ल ने भी कहा है कि प्रायः लोग कहते हैं कि कविता का अंतिम उद्देश्य मनोरंजन है, पर मेरी समझ में मनोरंजन उसका अंतिम उद्देश्य नहीं है। कविता कम-से-कम शब्दों में जितनी सरल, सुगढ़ तथा लयात्मक ढंग से अधिक-से-अधिक बातें व्यक्त कर सकती है, उतना गद्य नहीं। इसीलिए कविता अधिक समय तक याद रहती है। लयात्मक होने के कारण इसे कहीं भी गुनगुनाया जा सकता है। दूर सुनसान रास्ते में अकेले चला जा रहा राही कविता गुनगुनाकर अपना मनोरंजन कर लेता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि कविता हमारे जीवन की अन्य आवश्यकताओं की तरह ही एक प्रमुख आवश्यकता है। कविता के माध्यम से प्राप्त होनेवाला सुख किसी भी भौतिक सुख से अलग और बेहतर होता है। यहाँ पर आप यह न समझें कि कविता केवल किताबों और अखबारों में छपी हुई ही होती है। बल्कि गीत, गज़ल, फिल्मी धुन, नज़्म, शेर आदि सभी कविता के ही विभिन्न रूप हैं। आप अवश्य ही कुछ-न-कुछ गुनगुनाते रहते होंगे और इसका आनंद लेते होंगे।

1.3 कविता के अवयव

कविता के अवयव से हमारा तात्पर्य उन तत्त्वों से है जिनसे मिलकर कविता बनती है, अथवा कविता पढ़ते समय जिन तत्त्वों पर मुख्य रूप से हमारा ध्यान आकर्षित होता है।

काव्य अर्थात् कविता के आरंभिक काल से ही कविता के स्वरूप को समझने का प्रयास विद्वानों ने किया है। प्राचीन काल में भारतीय काव्यशास्त्र के अंतर्गत कविता

टिप्पणी

कथ्य: कविता में कवि जो बात कहना चाहता है उसे 'कथ्य' कहते हैं।

विचार-द ष्टि: तरह-तरह के विचारों, अनुभवों और तर्कों के बाद व्यक्ति के मन में जो विचार बनता है और उसी विचार के आधार पर लगातार रचना करता रहता है उसे विचार-द ष्टि कहते हैं। जब इसी प्रकार द ष्टि को दूसरे लोग अपनाना शुरू कर देते हैं और अपना आदर्श मानने लगते हैं तो वह विचारधारा का रूप ले लेती है।

कल्पना: किसी वस्तु या स्थिति के बारे में सोचना और उसके तरह-तरह के चित्र अपने मन में खींचने की क्रिया को कल्पना कहते हैं।

की तुलना एक सुंदर युवती से की गई है और कहा गया है कि शब्दार्थ जिसका शरीर है, अलंकार जिसके आभूषण हैं, रीति शारीरिक अवयवों का गठन है; गुण, स्वभाव और रस आत्मा है। इन अवयवों के अलावा छंद को भी काव्य का अवयव माना गया है।

इस आधार पर काव्य के छह अवयव बताए गए हैं। किंतु आधुनिक काल तक आते-आते इन अवयवों के विषय में विद्वानों की मान्यता बदल गई। छंद, रीति, रस और अलंकारों पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया। इसके स्थान पर कविता में कथ्य अर्थात् कही जाने वाली बात और विचार-द ष्टि अर्थात् कवि के चिंतन को विशेष महत्त्व दिया जाने लगा। किंतु उपर्युक्त अवयवों को पूरी तरह बेकार साबित करके इन्हें कविता से अलग नहीं किया जा सकता। इसीलिए कविता के बारे में अब कहा जाने लगा है कि काव्य का अंतरंग उसका बोधपक्ष (भाव पक्ष) है और बहिरंग कलापक्ष (शिल्प सौंदर्य)। दोनों ही महत्त्वपूर्ण हैं। अंतरंग काव्य को उत्कर्षमय बनाते हैं तो बहिरंग कलापक्ष को सार्थकता प्रदान करते हैं।

इस प्रकार हम कविता के अवयवों को दो भागों में विभाजित करके देख सकते हैं—भावपक्ष तथा कलापक्ष।

1.3.1 भावपक्ष

भावपक्ष कविता का वह पक्ष है जिसमें कवि का चिंतन, उसकी सोच तथा उसका संदेश होता है। इन्हें हम तीन प्रमुख रूपों में देखते हैं—**कथ्य, रस** तथा **विचार-द ष्टि**। कथ्य का अर्थ होता है कविता में कही गई बात। कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है, उसका संदेश क्या है तथा कवि की भावनाओं के स्रोत क्या हैं और उन भावनाओं के पीछे कौन-सी बातें छिपी हैं। प्राचीनकाल में रस को कविता की आत्मा माना जाता था और तब कविता में रस का समावेश सप्रयास किया जाता था, किंतु आधुनिक कविता में रस अपने आप कथ्य और भाषा के कौशल से उत्पन्न हो जाते हैं। कविता के अवयवों में आज भी रस का महत्त्वपूर्ण स्थान है। रस कविता के वे तत्त्व होते हैं, जो पाठक के अंदर सोये हुए स्थायी भावों को जगा कर कथ्य को ग्रहण कराने में सहायता पहुँचाते हैं तथा पाठक को भी कवि की मनःस्थिति तक पहुँचाने का प्रयास करते हैं। यहाँ **विचार-द ष्टि** से मतलब है कि कवि का विचार स्रोत क्या है, वह किसी चिंतन परंपरा से प्रभावित है अथवा नहीं और यदि है तो उसके विचारों में कौन से मूल तत्त्व हैं जो पूर्ण चिंतन-परंपरा से उसके विचारों को जोड़ते अथवा अलग करते हैं। भावपक्ष कविता का आधार और सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष माना जाता है। आप ऊपर पढ़ चुके हैं कि कविता में भावना प्रधान होती है और गद्य में विचार। इसीलिए भावपक्ष कविता का महत्त्वपूर्ण पक्ष होता है। इसे काव्य की आत्मा तक कहा गया है। काव्य के भावपक्ष में **कल्पना** भी एक प्रमुख अवयव है। जो चीज वास्तव में होती नहीं है किंतु कवि स्मरण कर या अपने सोच के आधार पर उसका चित्र खींच देता है वह कल्पना के द्वारा ही संभव हो पाता है। कई बार आप पढ़ते होंगे कि दो चिड़ियाँ आपस में बात करती दिखाई जाती हैं। चिड़ियों का बोलना या बात करना कवि की कल्पना द्वारा रची गई चीज़ है।

1.3.2 कलापक्ष

कलापक्ष कविता का वह पक्ष होता है जिसके द्वारा कवि अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति

करता है। इसमें कवि का शिल्पचातुर्य दिखाई देता है। कितने कलात्मक ढंग से और किन वस्तुओं के उत्कृष्ट प्रयोग से कवि ने अपनी बात को अभिव्यक्त करने की कोशिश की है, वह कलापक्ष के अंतर्गत दिखाई देता है। कलापक्ष में भाषा-शैली, छंद, अलंकार आदि प्रमुख तत्त्व होते हैं। आइए, अब हम इन प्रमुख तत्त्वों का अलग-अलग विश्लेषण करते हैं–

भाषा-शैली

आपको ऊपर यह बात बार-बार याद दिलाई गई है कि कविता की भाषा विशिष्ट होती है। कम-से-कम शब्दों और प्रवाहपूर्ण भाषा में कवि अपनी बातें कहता है तो वह कविता का रूप ले लेती है। इस प्रकार कविता के कलापक्ष के अंतर्गत भाषा का बारीकी से अध्ययन किया जाता है क्योंकि इसी के माध्यम से वह बात स्पष्ट होती है, जो कवि ने कही है। भाषा को कवि ने किस कौशल और कलात्मकता के साथ परोसा है, वह कवि की शैली कही जाती है।

छंद

कविता की भाषा प्रवाहमयी होती है। इसलिए कविता को प्राचीन समय में छंदों के माध्यम से रचा जाता था। छंद का अर्थ होता है भाषा के लयात्मक रूप को एक निश्चित ढाँचे में बाँध कर रखना; जैसे–दोहा, चौपाई, सोरठा, सवैया आदि छंदों के भेद हैं। कुछ छंदों में मात्राओं की गणना की जाती है और कुछ छंदों को वर्णों की संख्या के आधार पर पहचाना जाता है। मात्रा के आधार पर रचे गए छंदों को 'मात्रिक छंद' तथा वर्णों के आधार पर रचे गए छंदों को 'वार्णिक छंद' कहते हैं।

हिंदी कविता में छायावाद युग के बाद छंदों का प्रचलन आवश्यक नहीं रह गया। अब आधुनिक समय में छंदों का प्रयोग कुछ कवि ही करते हैं। इसलिए छंद अब कविता का अवयव नहीं रहा है। आधुनिक कविता का स्वरूप मुक्त छंद हो गया है।

अलंकार

प्राचीन कविता में भाषा के कौशल से कवि अलंकारों का स जन सप्रयास करते थे किंतु अब कवि अलंकारों पर अधिक ध्यान नहीं देते। लेकिन, कवि के भाषा कौशल तथा कथ्य की भंगिमा के कारण अलंकारों की सहज उत्पत्ति को रोका नहीं जा सकता। आज अलंकार कविता के महत्त्वपूर्ण अंग भले ही न हों, किंतु एक अवयव के रूप में अवश्य माने जाते हैं।

अन्य

आधुनिक कविता में रस, छंद और अलंकारों का जानबूझ कर प्रयोग नहीं किया जाता है, किंतु कुछ ऐसे तत्त्व हैं जिन्हें जानबूझ कर भी कविता में लाने का प्रयास किया जाता है। आधुनिक कविता में उन तत्त्वों का कौशलपूर्वक प्रयोग आसानी से देखा जा सकता है। इन तत्त्वों में मुख्य रूप से प्रतीक और बिंब का उल्लेख किया जा सकता है।

टिप्पणी

क्या आप जानते हैं कि 'प्रतीक' किसे कहते हैं? प्रतीक का अर्थ है किसी वस्तु के माध्यम से किसी अन्य वस्तु अथवा घटना से संबंधित बात का कहा जाना। उदाहरण के लिए आपने सूरदास का भ्रमरगीत सार पढ़ते समय गोपियों द्वारा बार-बार भ्रमर शब्द का प्रयोग ज़रूर पढ़ा होगा। आप तो जानते हैं कि भ्रमर यानी भौंरे का रंग काला होता है। उद्धव का रंग भी काला था और कृष्ण साँवले। भौंरे का स्वभाव है फूलों पर डोलते हुए रसपान करना। यानी प्रकारांतर से गोपियाँ भौंरे के माध्यम से उद्धव पर व्यंग्य करती हैं और कुछ हद तक कृष्ण को भी उलाहना दे देती हैं। यहाँ भ्रमर प्रतीक के रूप में आया है।

उसी प्रकार बिंब का अर्थ होता है परछाई अर्थात् भाषा कौशल के द्वारा किसी स्थिति का चित्र खींचा जाना। जब बात कहने पर चित्र स्पष्ट होने लगे तो उसे बिंब कहते हैं। कई बार आप कविता पढ़ते समय ऐसा अनुभव करते होंगे कि जो बात कही जा रही है उससे कई बातों का आभास मिल रहा है। दूसरी स्थितियों और घटनाओं के भी चित्र आँखों के सामने उभरते चले जा रहे हैं। इसी भाषा कौशल को बिंब कहते हैं।

इस प्रकार उपर्युक्त सभी तत्त्व मिलकर कविता की रचना में सहयोग प्रदान करते हैं अतः कविता को पढ़ते समय इन सभी अवयवों पर ध्यान देना भी आवश्यक हो जाता है।

पाठगत प्रश्न 1.2

निम्नलिखित वाक्यों की पूर्ति कीजिए:

1. कविता की प्रेरणा से कार्य में ....बढ़ती है। (प्रव त्ति, कुव त्ति, व त्ति)
2. प्राचीन विद्वानों ने ....को कविता की आत्मा माना है। (बिंब, रस, लय)
3. प्रतीक तथा बिंब..........पक्ष के तत्त्व हैं। (भाव, कला, विचार)

1.4 कविता कैसे पढ़ी जाए

कविता के संबंध में इतना कुछ पढ़ लेने के बाद अब आपके मन में विचार आ रहा होगा कि कविता पढ़ी कैसे जाए, ताकि आसानी से समझ में आ जाए और उसमें की गई बात का आशय भी स्पष्ट हो जाए।

कविता को पढ़ने का ढंग गद्य से भिन्न होता है। आपने कवि सम्मेलनों, आकाशवाणी अथवा दूरदर्शन पर कवियों को कविताएँ पढ़ते तो सुना ही होगा। जब कभी कवि स्वयं अपनी कविताएँ सुनाते होंगे, तब वे आपको कठिन नहीं लगती होंगी। बल्कि कई बार तो कविता सुनने के लिए आप अपने बाकी सारे काम छोड़-छाड़ कर बैठ जाते हैं। इसके पीछे क्या कारण है? एक कविता जो कवि सम्मेलन में सुनाई जा रही है, वह आपको अच्छी लगती है और एक कविता जो किताबों में छपी है वह समझ में नहीं आ रही।

जानते हैं क्यों? इसके पीछे एक प्रमुख कारण होता है– कविता के पढ़ने का ढंग। कविता को पढ़ने का अंदाज़ कविता को कठिन और आसान बनाता है। इसलिए कविता को ठीक से समझने और आनंद प्राप्त करने के लिए ज़रूरी है कविता को ठीक से यानी उचित लय, तान के साथ पढ़ना। कविता पढ़ने के लिए कुछ सामान्य बातों का ध्यान रखना बहुत ज़रूरी होता है–

- कविता पढ़ने का उद्देश्य सिर्फ़ शब्दों के अर्थ जान लेने, उसकी सामान्य व्याख्या समझ लेने अथवा व्याकरण संबंधी विशेषताओं को जान लेने-भर से पूरा नहीं हो जाता। कविता पढ़ने की सार्थकता तो तब है, जब कवि के द्वारा व्यक्त भावनाओं तक पहुँचकर उसके द्वारा कही गई बात को ग्रहण कर लिया जाए। इसके लिए आवश्यक है कि यह जानकारी भी प्राप्त की जाए कि कवि ने किस परिस्थिति में अथवा किस वातावरण में कविता लिखी है। जैसे स्वतंत्रता-संग्राम के समय की कविताओं को पढ़ते समय उस समय की ऐतिहासिक प ष्ठभूमि की जानकारी प्राप्त कर ली जाए तो कविता में कही गई बातें अपने आप स्पष्ट होती चली जाएँगी। अथवा मध्यकालीन राजा की प्रशंसा में लिखी गई कविता को पढ़ते समय उसकी ऐतिहासिक प ष्ठभूमि को न समझते हुए आधुनिक परिवेश से जोड़ दिया जाए तो कविता में कही गई बात स्पष्ट नहीं हो पाएगी। इसलिए कविता पढ़ते समय उसके रचनाकाल और रचनात्मक परिवेश की भी जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है।

- कोई भी कविता पढ़ते समय अगर संभव हो तो कविता के रचयिता अर्थात् कवि का संक्षिप्त परिचय भी प्राप्त कर लिया जाए। इससे कविता में निहित रस, विचारद ष्टि तथा भावनात्मक तत्त्वों को समझने में सहायता मिलती है। इससे भावपक्ष को समझने में भी आसानी होती है।

- कविता का सस्वर पाठ किया जाना चाहिए। इससे उचित यति-गति, लय आदि से कविता के अर्थ खुलने लगते हैं। पढ़ने की उचित शैली से कविता को समझने में बहुत अंतर आ जाता है। इससे कविता में नाद-सौंदर्य के आ जाने से कथ्य मन में बैठते चले जाते हैं और भाषा संबंधी छोटी-मोटी जटिलताएँ अपने आप स्पष्ट होती चली जाती हैं।

- कविता के कलापक्ष को समझने के लिए भाषा, छंद, अलंकार तथा प्रतीक-बिंबों की स्पष्ट समझ भी आवश्यक होती है क्योंकि कविता कम-से-कम शब्दों में अपनी बात कह जाती है, अतः कलात्मक समझ के बिना कविता में कही गई बात को विस्तार और गहराई से ग्रहण करना संभव नहीं होता।

- कविता की भाषा को भी समझने का प्रयास किया जाना चाहिए। कविता की भाषा का अर्थ केवल शब्दों के अर्थ जानना ही नहीं, बल्कि भाषा के माध्यम से चित्रात्मकता तथा भावात्मकता की अभिव्यक्ति का विश्लेषण भी होना चाहिए।

- संबंधित कविता के समान कोई और पढ़ी हुई कविता ध्यान में आ रही हो तो उससे प्रस्तुत कविता की तुलना की जानी चाहिए तथा दोनों में समानता और असमानता का अध्ययन किया जाना चाहिए।

इस प्रकार कविता पढ़ने के लिए साहित्य तथा अन्य विषयों की भी गहन जानकारी अपेक्षित रहती है। कविता पढ़ते समय यदि उसके सीधे अर्थों की ओर भागने की कोशिश की जाएगी तो कठिनाई पैदा हो जाएगी। कविता पढ़ने का अर्थ है कवि की उस मनःस्थिति तक पहुँचने की कोशिश करना, जिसमें रमकर कवि ने रचना की है। इसे कहते हैं कवि की अनुभूति को पकड़ने की कोशिश करना।

पाठगत प्रश्न 1.3

उचित विकल्प चुनकर निम्नलिखित वाक्यों की पूर्ति कीजिए:

1. कविता पढ़ने के ढंग से कविता का ....बदल जाता है। (भाव, अर्थ, शब्द)
2. कविता पढ़ने के लिए कवि का परिचय जानना .... ।
   (जरूरी नहीं है, भी आवश्यक है, परिस्थिति पर निर्भर करता है)
3. कविता का ....किया जाना चाहिए।
   (सस्वर पाठ, मनमाना पाठ, रुक-रुक कर पाठ)

1.5 आपने क्या सीखा

- कविता में भाव तत्त्व की प्रधानता होती है। कविता गद्य की अपेक्षा कम शब्दों और प्रवाहपूर्ण भाषा में लिखी जाने के कारण व्यक्ति के मन पर अधिक प्रभाव डालती है।
- कविता के दो महत्त्वपूर्ण पक्ष होते हैं– भावपक्ष और कलापक्ष अर्थात् शिल्प-सौंदर्य।
- जिसमें कवि की कल्पना, रस, विचार और संदेश शामिल होते हैं, उसे भावपक्ष कहते हैं। छंद अलंकार, भाषा, शैली आदि कलापक्ष के अंतर्गत आते हैं।
- कविता पढ़ने के लिए उसके रचनात्मक परिवेश, कवि का परिचय तथा रस, छंद, अलंकार आदि का ज्ञान आवश्यक होता है।
- सस्वर पाठ से कविता का भाव स्पष्ट होता है तथा अर्थ खुलते हैं।
- भाव और निहित रस के अनुसार ही भाषा में काव्य के अंग (छंद, अलंकार आदि) उभर कर सामने आते हैं।
- इससे कविता का शिल्प-सौंदर्य निखर उठता है।
- कविता के मुख्य अवयव निम्नलिखित होते हैं:

कविता के प्रमुख अवयव

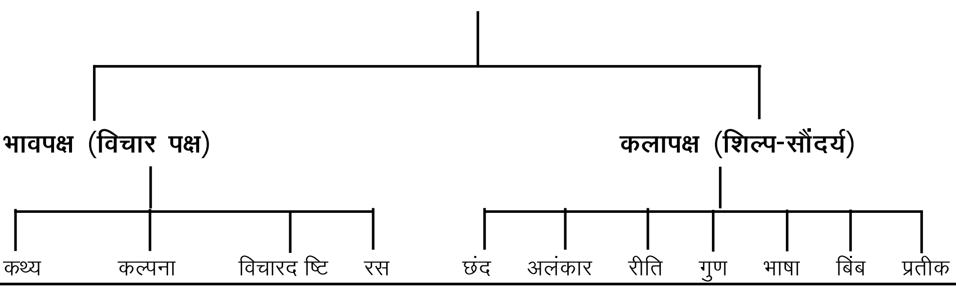

1.6 योग्यता विस्तार

समाचार पत्रों के रविवारीय अथवा मासिक और पाक्षिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कविताओं का अध्ययन कीजिए।

1.7 पाठांत प्रश्न

1. कविता किसे कहते हैं? विभिन्न विद्वानों के कथनों द्वारा पुष्टि कीजिए।
2. कविता के कलापक्ष से आप क्या समझते हैं? यह भावपक्ष से किस प्रकार भिन्न होता है।
3. कविता के आधुनिक काल में प्रमुख रूप से प्रयुक्त होने वाले किंहीं दो अवयवों के बारे में चर्चा कीजिए।
4. कविता के सस्वर पाठ से क्या तात्पर्य है?
5. प्रतीक तथा बिंब किसे कहते हैं?

1.8 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1.1 1. भाव 2. अलंकारहीन
3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल 4. लयात्मकता

1.2 1. प्रव त्ति 2. रस
3. कला

1.3 1. अर्थ 2. भी आवश्यक है
3. सस्वर पाठ